# बिहार में आर्य समाज आन्दोलन

**ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा**
**के इतिहास (सामाजिक विज्ञान संकाय)**
**में पी-एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत**

## शोध-प्रारूप


**शोध पर्यवेक्षक**

**डॉ० अमित कुमार सिन्हा**
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
इतिहास विभाग
कुँवर सिंह महाविद्यालय, लहेरियासराय,
दरभंगा (बिहार)

**शोधार्थी**

**मन्टू प्रसाद**
पिता- श्री रामवृक्ष प्रसाद
ग्राम- सहसपुर, पो०- जोगियारा
थाना- जाले, जिला- दरभंगा- 847303 (बिहार)
मो०- 7631576697
ई-मेल- mantooprasad571@gmail.com

## 1. शोध का शीर्षक

## बिहार में आर्य समाज आंदोलन

## 2. शोध समस्या/प्रस्तावना

आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानन्द सरस्वती ने मूल रूप से वर्ष 1875 ई० में (बम्बई) मुम्बई में की थी। आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य प्राचीन वैदिक धर्म की शुद्ध रूप से पुनः स्थापना करना था।

आर्य समाज की स्थापना के पहले भी स्वामी दयानन्द सरस्वती बिहार का दौरा कर चुके थें और उन्होने अपने बिहार प्रवास के दौरान अनेक कर्मकांडी पंडितों को शास्त्रार्थ में पराजित कर अपने विशुद्ध वैदिक धर्म के विचारों से बिहारवासियों को प्रभावित किया था, जो वैदिक धर्म मूर्त्ति पूजा, जाति-वर्ण व्यवस्था और धार्मिक पाखंड एवं वितंडा को स्वीकार नहीं करता था। अपनी इस धार्मिक यात्रा के क्रम में दयानन्द सरस्वती ने बिहार के बक्सर, आरा, डुमरांव, पटना, मुंगेर के छपरा, भागलपुर आदि नगरों में प्रवचन दिया और कर्मकांडी-पंडितों को शास्त्रार्थ में पराजित किया।

बिहार से वे कलकत्ता गए और बिहार फिर भाया बिहार वे मुम्बई गए जहाँ उन्होने आर्य समाज की स्थापना की। आर्य समाज के विचारों से प्रभावित बिहारियों ने उन्हें फिर बिहार आने का निमंत्रण दिया और वे दानापुर आए और वहाँ आर्य समाज की स्थापना की। शीघ्र ही बिहार में आर्य समाज की शाखाएँ आरा, पटना, पटना सिटी, छपरा, सीवान, मुंगेर, राँची, भागलपुर के बाद वे 6 सितम्बर 1872 को पटना पहुँचे। वहाँ उन्होंने पटना, मुजफ्फरपुर, मोतिहारी आदि शहरों में कॉलेज के पी० रामजीवन जो

मूर्ति पूजा के विरोधी थे, जिसमें आर्य समाज फैल गयी। 15 अक्टूबर 1904 को पटना में बिहार प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा का गठन किया गया जिससे बिहार में आर्य समाज का प्रथम केन्द्र 1875 ई० में दानापुर में बिहार की सभी शाखएँ सम्बद्ध थीं। 1526 तक बिहार में आर्य समाज की कुल 43 शाखाएँ क्रियाशील थीं।

बिहार में आर्य समाजियों ने समाज सेवा के कार्यो; राष्ट्रीय चेतना के विकास और शिक्षा के क्षेत्र में ऐतिहासिक कार्य किया। सामाजिक आन्दोलन के माध्यम से जाति-पाँत, छूआ-छूत, धार्मिक अंधविश्वास, पाखंड और धार्मिक कर्म-कांडों का घोर विरोध किया। राष्ट्रीय चेतना विकास और राष्ट्रीय आन्दोलन में बिहार के आर्य समाज ने महत् योगदान दिया। अनेक अनाथालय, बाल-विकास आश्रम, औषधालय और शिक्षालयों की स्थापना की। पटना में प्रेस की स्थापना कर बिहार के बौद्धिक जागरण का पथ प्रशस्त किया। यज्ञोपवीत आन्दोलन और गोरक्षा आन्दोलन के माध्यम से आर्य समाज ने जातिवाद और गोहत्या को समाप्त करने का अथक प्रयास किया। अनेक गुरूकुल विद्यालयों और महाविद्यालयों के अलावे करीब डेढ़ दर्जन शहरो में डी. ए. वी. हाई स्कूलों एक दर्जन कन्या उच्च विद्यालयों और करीब तीन दर्जन प्राथमिक एवं मध्य विद्यालयों का संचालन कर बिहार में आधुनिक एवं वैदिक दोनों ही प्रकारों की शिक्षा के व्यापक प्रसार में महत योगदान दिया।

वास्तव में आधुनिक बिहार के निर्माण में आर्य समाज का अप्रतिम योगदान था, जिनका विस्तृत एवं आलोचनात्मक अध्ययन अपेक्षित है। प्रस्तावित शोधकार्य इसी अपेक्षा को पूरा करने का एक विनम्र प्रयास है।

## 3. पूर्व अध्ययनों की समीक्षा

बिहार में आर्य समाज आन्दोलन के इतिहास पर अब तक विस्तृत अध्ययन नहीं किया जा सका है। ***'Comprehensive History of Bihar'*** Vol. III, Part II के एक अध्याय में हिन्दू समुदाय के धार्मिक आन्दोलनों के साथ ब्रह्म-समाज आन्दोलन की चर्चा की गई है, परन्तु यह विस्तृत एवं सूक्ष्म विवेचन के बजाय एक रेखांकन मात्र है। सात भागों में प्रकाशित पुस्तक ***'आर्य समाज का इतिहास'*** आर्य समाज आन्दोलन का सबसे विस्तृत अध्ययन है, परन्तु इसका अध्ययन क्षेत्र अखिल भारतीय है, जिसमें बिहार में आर्य समाज आन्दोलन की विस्तृत चर्चा नहीं है। इसी तरह, J.N. Farquhar की पुस्तक ***'Modern Religious Movement in India'***, Amiya P. Sen द्वारा सम्पादित ***'Social and Religious Reform'***, Christopher Jaffrelot की ***Religion***, ***Caste and Politics in India***, इन्द्र विद्यावाचस्पति की पुस्तक **'आर्य समाज का इतिहास'** आदि में आर्य समाज आन्दोलन के इतिहास पर तो काफी प्रकाश पड़ता है, परन्तु उनमें बिहार का हिस्सा काफी कम है। जाहिर है कि अब तक बिहार पर केन्द्रित आर्य समाज आन्दोलन के इतिहास का स्वतंत्र अध्ययन नहीं हो पाया है। प्रस्तावित शोध कार्य इस कमी को पूरा करने का एक प्रयास है।

## 4. उद्देश्य, महत्व एवं प्रासंगिकता

प्रस्तावित अध्ययन का उद्देश्य आर्य समाज आन्दोलन के माध्यम से बिहार के सामाजिक, शैक्षिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में पैदा हुए पुनर्जागरण के परिणामस्वरूप आधुनिक बिहार के निर्माण में आर्य समाज के योगदान को रेखांकित करना है। गौरतलब है कि आर्य समाज में लिखा है-

दानापुर के माखनलाल और श्यामलाल, दयानन्द सरस्वती ने बिहार में व्याप्त सामाजिक धार्मिक पाखंड, कर्मकांड, छुआछूत, जातिवाद, अंधविश्वास और अशिक्षा से बिहार को उबारने और राष्ट्रीय चेतना के विकास में महत् योगदान दिया जिसका प्रासंगिक महत्व है।

## 5. ज्ञान के क्षेत्र में योगदान

प्रस्तावित शोध कार्य से नए तथ्यों, आंकड़ों और जानकारियों के प्राप्त होने की पूरी सम्भावना है जिससे ज्ञान का क्षितिज विस्तृत होगा। उल्लेखनीय है कि आर्य समाज आन्दोलन के राजनीतिक निहितार्थ हिन्दुत्ववादी थे, जिसे वर्त्तमान राजनीतिक क्षेत्र में सनातन धर्म के पुनरुत्थान के रूप में देखा जा सकता है। इसकी आधारशिला आर्य समाज आन्दोलन ने ही तैयार की थी। स्पष्ट है कि प्रस्तावित अध्ययन ज्ञान के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण अवदान सिद्ध होगा।

## 6. अध्ययन क्षेत्र

उल्लेखनीय है कि आर्य समाज आन्दोलन आधुनिक भारत की एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक परिघटना रही है, जिसका कार्य क्षेत्र अखिल भारतीय स्तर पर था और इसका सरोकार सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों से था। अतः प्रस्तावित शोध कार्य का अध्ययन क्षेत्र 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध और 20वीं सदी के उत्तरार्द्ध के मध्य सम्पूर्ण भारत का इतिहास होगा।

## 7. अध्ययन पद्धति

प्रस्तुत शोध कार्य को ऐतिहासिक आलोचनात्मक पद्धति का अवलम्बन कर पूर्ण किया जायेगा। चूंकी मुख्यरूप से विषय सामाजिक धार्मिक जीवन से जुड़ा है, अत: आवश्यकतानुसार समाज शास्त्रीय अध्ययन पद्धति का भी सहारा लिया जायगा। आर्य समाज ने आदिवासियों और जनजातियों के बीच भी काफी काम किया, अत: अध्ययन को पूरा करने के लिए नृतात्विक अध्ययन पद्धति भी सहायक सिद्ध हो सकता है। जाहिर है कि बहुअनुशासनात्मक अध्ययन पद्धति को अपना कर प्रस्तावित शोध कार्य को सम्पन्न किया जायगा।

## 8. शोध सामग्री की उपलब्धता

बिहार में आर्य समाज के अनेक पुस्तकालयों, शिक्षण संस्थानों और राष्ट्रीय एवं बिहार राज्य अभिलेखागारों में पर्याप्त शोध सामग्री उपलब्ध है, जिनका उपयोग कर अध्ययन को सम्पन्न किया जा सकता है।

## 9. शोध संकल्पना

प्रस्तावित अध्ययन इस शोध संकल्पना पर आधारित है कि आर्य समाज आन्दोलन ने सामाजिक धार्मिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक नवजागरण के माध्यम से आधुनिक बिहार के निर्माण में महती भूमिका का निर्वाह किया।

## 9. कार्ययोजना

प्रस्तावित अध्ययन निम्नलिखित अध्यायों के अन्तर्गत सम्पन्न किया जायगा-

प्रस्तावना

**अध्याय–I** : बिहार में आर्य समाज आन्दोलन का सांगठनिक इतिहास

**अध्याय–II** : बिहार में आर्य समाज आन्दोलन के सामाजिक कार्य

**अध्याय–III** : बिहार में आर्य समाज आन्दोलन के शैक्षिक कार्य

**अध्याय–IV** : बिहार में आर्य समाज आन्दोलन के राहत एवं सेवा कार्य

**अध्याय–V** : आर्य समाज आन्दोलन और बिहार में राष्ट्रीय चेतना और बौद्धिक जागरण का विकास

निष्कर्ष

## 10. स्रोत संदर्भ ग्रन्थ सूची


1. Shardar Har Bilas, *Life or Dayanand Sarswati*
2. Shastri Ram Narayan, *History of Arya Pratinidhi Sabha*
3. Vidyawachspti Indra, *Arya Samaj Ka Etihas*
4. Sriniwas M.N., *Social Changes in Modern India*
5. Charya G.S, *Caste and Class in India*
6. Rai Lala Lajpat, *The Arya Samaj*
7. Saraswati Dayanand, *Satyarth Prakash*
8. Vidyarthi Dharmadeva, *Arya Samaj Ka Itihas*
9. Pandey Dhanpati, *The Arya Samaj and India Nationalism*, 875-1920.
10. Pandit Aryamuni, *Vedantaryyabhashya*
11. Swami Omananda Saraswati, *Arya Smaj Ka Balidan*
12. Prabhakar Vishnu, *Swami Dayanand Saraswati*
13. Ram Munshi, *Arya Samaj and Politics*
14. Sharda Har Bilas, *Hindu Superiority*

14\. Upadhyaya Ganga Prasad, *The Origin, Scope and Mission of the Arya Samaj*

15. Chamupati, *The Principles of Arya Samaj*

16. Gupta Vishwaprakash, *Swami Dayanand Sarswati Vyakti aur Vichar*

17. Acharya Abhayadeva, *Vaidik Vinay*

18. Parmanand, *Hindu Sangathan*

19. Gurudutt, Dharma, *Sanskriti Aur Rajya*

20. Kali Kinkar Datta, Comprehensive History of Bihar' Vol. III, Part II

21. Prasnn Kumar Chaudhary, Bihar Me Samajik Parivatran Ke Kuchh Aayam.



**शोध पर्यवेक्षक**

**डॉ० अमित कुमार सिन्हा**
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
इतिहास विभाग
कुँवर सिंह महाविद्यालय, लहेरियासराय,
दरभंगा (बिहार)

**शोधार्थी**

**मन्टू प्रसाद**
पिता- श्री रामवृक्ष प्रसाद
ग्राम- सहसपुर, पो०- जोगियारा
थाना- जाले, जिला- दरभंगा- 847303 (बिहार)
मो०- 7631576697

ई-मेल- mantooprasad571@gmail.com